सत्य और अर्थपूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय ख्रिस्त

लेमेन्स इवैंजलिकल फैलोशिप इंटरनेशनल, मार्च-अप्रैल 2018

नयी वाचा

सत्य मोल लो, और बेचो मत

पढ़िये: मरकुस 14:10-24; यिर्मयाह 31:31-34

यहां नई वाचा की प्रतिज्ञा है। परमेश्वर ने इस्राएलियों को मूसा के द्वारा अपनी व्यवस्था दी। परन्तु व्यवस्था की आत्मा खो गई और केवल व्यवस्था के अक्षर ही रह गए। आप व्यवस्था के अक्षरों का पालन कर सकते है और जिस में आत्मा वहां से पूरी तरह खो गई है। मूसा की व्यवस्था में सात बातों के बारे लिखा है "इसे मत करना।" जो परमेश्वर का सकारात्मक स्वभाव था, वह मनुष्य के अंदर नहीं आया - प्रेम का स्वाभाव। बिन विश्वास के प्रेम हो सकता है। परन्तु बिन विश्वास का प्रेम स्वार्थी होता है। विश्वास के साथ प्रेम होने पर आप अपने से द्वेष करेंगे और दूसरों से प्रेम करेंगे और आपके अंदर आनन्द की भरपूरी होगी। आपकी धार्मिकता दूसरों तक पहुंचेगी और उन्हें परिवर्तित करेगी। व्यवस्था के जरिए,

नयी वाचा... पृष्ठ 4 पर

आत्मिक उन्नति के लिए देखना न भूलें।

परमेश्वर की चुनौती

TV - Star Utsav

चैनल पर

*हर **रविवारसुबह 7:30 से 8:00** बजे*

मुझे याद आता है कि एक बार मेरे पिता ने परमेश्वर का संदेश इस शीर्षक पर दिया था, "सत्य को मोल ले लो और बेचो मत"। लेकिन ऐसा लगता है कि कइयों की बाईबल कहती है, सत्य को बेचकर संसार को ख़रीद लो। लेकिन बाइबल सिखाती है, "सच्चाई को मोल ले और उसे मत बेच, बुद्धि, शिक्षा और समझ को प्राप्त कर।" (नीतिवचन 23:23) लेकिन मैं क्या देखता हूँ? लोग किसी ख़ास चीज़ को पाने के लिए कोई भी मूल्य चुकाने के लिए तैयार हैं। क्या तुम्हें यह नहीं दिखता? यदि वो फ़ुटबॉल का मैच देखना चाहते हैं और अगर दो मशहुर टीमों के बीच मुकाबला हो तो जैसे तैसे कहीं न कहीं से टिकट जुटा लेंगे। यह कितना अश्चर्यजनक है कि लोग कुछ दिन की छुट्टी मनाने के लिए सारे साल कितनी मेहनत करते हैं। मुझे एक सप्ताह की छुट्टी मिलेगी और मैं बहामा द्वीप पर छुट्टी मनाने जाऊंगा। साल भर यह उनका सपना रहता है। इसलिए वह पैसा इक्ठठा करते हैं, चाहे कितनी बड़ी रक़म क्यों न हो और वे निकल पड़ते हैं, और थके-हारे वापस लौटते हैं। तो मैंने यह पाया कि किसी चीज़ को पाने के लिए लोग कुछ भी क़ीमत चुकाने के लिए तैयार हैं। तो यह हमारे लिए बेहतर है कि हम अपने से यह प्रश्न करें कि हम सचमुच में क्या चाहते हैं? अब, सच्चाई क्या है? इस संसार की कोई ऐसी संपत्ति नहीं है जिसकी क़ीमत न गिरती हो, जिसका विघटन न होता हो, जिसका वियोजन न होता हो। केवल एक ही ऐसी चीज़ है जो सदैव बनी रहती है, परमेश्वर का सत्य।

सारे इतिहास में तुम किसी दूसरे को खण्डन के भय बिना यह कहता नहीं सुनोगे, "मैं (प्रभु यीशु मसीह) सत्य हूँ।" मेरे श्रोताओं में हर प्रकार के लोग आये हैं - विभिन्न धर्मों के लोग, साम्यवादी, विधर्मी, नास्तिक, परिहास करने वाले, तिरस्कार करने वाले। लेकिन किसी ने भी यह कभी न मिटने वाले सत्य का विरोध नहीं किया है। "मैं (प्रभु यीशु मसीह) मार्ग, सत्य और जीवन हूँ।" प्रभु यीशु मूल्य बढ़ता जाता हैं, जबकि हमें इसके चिंता लगी रहती है कि जैसे ही हम अपनी कार को शोरूम से बाहर लाते हैं उसका मूल्य दस प्रतिशत गिर जाता है। लेकिन सत्य कभी भी अपना मूल्य नहीं खोता।

यह अनुमान लगाने के लिए कि तुम कितनी गहराई से सत्य को जानने और संजोय रखना चाहते हो, इससे जान पड़ता है कि उसके लिए तुम क्या दाँव पर लगाने के लिए तैयार हो। यह बहुत ही सीधी बात है। यही तरीक़ा है जिससे हम मूल्य जानते हैं। ऐसा जान पड़ता है कि कुछ लोग मूल्य को केवल रूपयों में समझते हैं और यही उनको समझ में आता है। चलो, मैं आप कुछ लोगों से यह प्रश्न करता हूँ। तुम सत्य को पाने के लिए कितना पैसा खर्च करने को तैयार हो?

आज, हम ऐसे दिखावटी लोगों को पाते हैं, जो सत्य के विषय में बोलते हैं लेकिन सत्य को पाने के लिए कुछ भी खर्च करने के लिए तैयार नहीं हैं। मैं तुम्हें यह बता दूँ कि वह झूठी और दुष्ट आत्मा है। जब तुम सत्य के विषय में बोलो तो यह पिलातुस की भाँति सत्य के विषय में बोलने का दूस्साहस न करो। पिलातुस ने सत्य के विषय में कहाँ बोला? जब यीशु मसीह को उसके सामने लाया गया। यदि तुम युहन्ना की पुस्तक 18 वे अध्याय की ओर ध्यान दोगे तो बड़ी रहस्यमय परिस्थिति को पाओगे। वास्तव में एक न्यायधीश जाँच पड़ताल और सत्य को साबित करने के लिए होता है। वास्तव में क्या हुआ? यह अपराध कैसे हुआ? क्या वह एक योजना बना कर किया गया अपराध है या उसी समय भावुक होकर किया गया? न्यायधीश का यही उद्देश्य होता है कि वह सत्य को खोजे। पिलातुस ने उससे कहा, "क्या तुम राजा हो? यीशु ने उत्तर दिया तुम ठीक कहते है कि मैं राजा हूँ। मैं ने इसलिए जन्म लिया और इसलिए इस संसार में आया हूँ कि सत्य की साक्षी दूँ। प्रत्येक जो सत्य का है मेरी वाणी सुनता है।" पिलातुस ने उस से कहा, "सत्य क्या है?" और जब यह कह चुका तो वह फिर यहूदियों के पास बाहर आया और उनसे कहा, "मैंने उसमें कोई दोष नहीं पाया।" यहाँ पर यह कहा जा सकता है कि सारे मानवता के इतिहास में केवल एक ही ऐसा व्यक्ति है जो सिद्ध है और वह है हमारा प्रभु यीशु। और पिलातुस यीशु को सामने खड़े किए हुए है और कहता है, "सत्य क्या है?" कौन न्यायधीश है, सत्य की खोज करने के लिए सत्य के समर्थन में खड़ा होने के लिए, और भीड़ की बात का समर्थन करने के लिए नहीं? आज लोग उसी को सच मानते हैं जो किसी दार्शनिक ने कहा हो या किसी प्रचारक ने कहा हो या किसी लेखक ने कहा हो - केवल यही। उनकी सत्य की खोज इतनी उथली है, वह उन्हें कभी यीशु तक नहीं लेकर आई है। कैसी दुःखदायी बात है। खोजी की कैसी विडम्बना है। मैं ऐसे लोगों से मिलता हूँ जो कहते हैं, 'मैं सत्य का खोजी हूँ', लेकिन तुम सत्य को पाने के लिए क्या मूल्य चुकाने को तैयार हो। क्या जो तुम्हारे विचारों में गंदगी और कचरा भरा है उसे निकालने को तैयार हो। क्या तुम बच्चों की भाँति कोमल हृदय वाले बनने को तैयार हो? क्या तुम सत्य को स्वीकार करने के लिए तैयार हो, सत्य के सामने दण्डवत करने को तैयार हो? तब तुम यीशु को खोजने में कोई कठिनाई अनुभव नहीं करोगे। लेकिन विषय यह है कि जब तुम पहले से सोचे हुए विचारों, दूसरों से लिए हुए और विभिन्न प्रकार के लोगों से बातें सुने हुए हो और तुम्हारा दिमाग पहले से भरा है तो तुम कभी सत्य को प्राप्त नहीं कर पाओगे। इस कारण बाईबल कहता है, 'हमेशा सीखते रहे लेकिन कभी सत्य न जान सके।' यह अंत समय का चिह्न है, ऐसे लोगों का चिह्न जिनकी आत्मा हमेशा के लिए नरक में चली जाएगी। क्यों? क्योंकि वे सब कुछ त्यागने को तैयार नहीं हैं।

भजन संहिता (117:1-2) 'हे जाति-जाति के सब लोगों, यहोवा की स्तुति करो। हे राज्य-राज्य के सब लोगों, उसकी जयजयकार करो। क्योंकि उसकी करुणा हम पर बहुत है, और यहोवा की सच्चाई सदा की है। याह की स्तुति करो।' एक ऐसी ठोस व अखण्ड वस्तु है, जो शाश्वत है - एकमात्र सत्य। बाक़ी सब का अंत हो जाता है, परमेश्वर का सत्य युगानुयुग बना रहता है। विधर्मियों की परिभाषा अनुसार, सत्य तुलनात्मक है। वह कहते हैं, यह भी सत्य हो सकता है, वह भी सत्य हो सकता है। यह कितने अचंभे की बात है। वह व्यक्ति जो बाइबल का अधययन करता है और वह व्यक्ति जो परमेश्वर के वचन का ज्ञान रखता है, कभी ऐसा नहीं कहेगा।

सत्य कभी सत्य नहीं हो सकता यदि उसकी कोई ठोस परिभाषा न हो। जेली फिश को देख कर तुम यह कैसे कह सकते हो कि उसकी लम्बाई ठीक इतनी है और चौड़ाई इतनी ही। यदि तुम उसे धरती पर पटको तो वह फैल जाएगी। यदि उसे छोटी परख नली में डालोगे तो वह एक मीटर लम्बी भी हो सकती है। इस प्रकार तुम्हारा सत्य भी एक मीटर लंबा और एक सेंटीमीटर समतल भी हो सकता है। वह कुछ भी हो सकता है।

मैं तुम्हें यह बताना चाहता हूँ कि सत्य असहिष्णु है, क्योंकि वह परिभाषित है। यदि तुम परमेश्वर के वचन के अनुसार जीवन बिताना चाहो और कचरे, गोबर, गंदगी और सारी बेकार की बातें अपनाओगे, तो कभी भी यह मत कहना कि तुम सत्य की खोज कर रहे हो। सत्य परिभाषित है। किसी दो शहरों के बिच की दूरी मीलों में नापी जा सकती है।

इस कारण प्रिय मित्रों, हम एक ऐसी प्रार्थना देखते हैं जो अति महत्वपूर्ण है। यह प्रार्थना तुम भजन संहिता 119:73 में पाते हो, '... मुझे समझ दे कि मैं तेरी आज्ञाओं को सीख सकूँ।' कितना

ALLAHABAD : Beautiful Books, 194A, Old Mumford Ganj,Pin Code-211 002, Uttar Pradesh, Ph.0532- 2642872.
BANSI : Eton English Medium School,Chitaunakothi,Siddharth Nagar Dt, Pin Code-272 153, Uttar Pradesh, ph.05545-255002
CHENNAI : LEF Head Quarter, 9-B, Nungambakkam High Road, Chennai, 600 034, 044-2827 2393
MUMBAI : Beautiful Books,Hotel Victoria, Ground Floor,SBSMarg,Near GPO, CST, Pin Code.400001, Ph.022-56334763/ 25008840
GANGTOK : Beautiful Books, P.B.No.94,31A, National Highway, Below High Court, Sikkim, Pin Code.737101 Ph.03592-228733
SHILLONG : Beautiful Books, P.B.No.39, Nongrimbah Road, Laitumkarh,Pin Code.793003, 0364-2501355

महत्वपूर्ण। राज सुलैमान ने 1 राजा 3:7,9 में प्रार्थना की, 'और, अब, हे मेरे परमेश्वर यहोवा, तू ने अपने दास को मेरे पिता दाऊद के स्थान पर राजा बनाया है, परन्तु मैं तो एक छोटा बच्चा ही हूँ, मैं भीतर-बाहर आना-जाना नहीं जानता। और तेरा दास ऐसी प्रजा के मध्य है, जिसे तू ने चुना है, वह ऐसी जाति है जो बड़ी संख्या के कारण गिनी नहीं जा सकती। इसलिए अपने दास को अपनी प्रजा का न्याय करने के लिए समझने वाला मन प्रदान कर कि मैं भले और बुरे का भेद जान सकूँ। क्योंकि ऐसा कौन है जो तेरी इतनी बड़ी प्रजा का न्याय कर सके?' परमेश्वर ऐसी प्रार्थना से प्रसन्न होते हैं। राजा सुलैमन, संसार का सर्वाधिक समझदार व्यक्ति, अपनी इस प्रार्थना का उत्तर पाता है, जैसे उसे परमेश्वर की प्रजा का न्याय करना था। उसे अनुभव हुआ कि सत्य को भाँपने की कहाँ उसमें समझ थी? वहाँ दो वेश्याएँ आई। जिनमें से एक ने गलती से अपने बच्चे को सोते समय अपने नीचे दबा कर मार डाला था। बाद में अपने बच्चे को मरा पा कर, उसने अपने बच्चे को दूसरी स्त्री के बगल में लिटा दिया और जीवित बच्चे को अपने पास रख लिया। इस का न्याय करवाने वे राजा सुलैमान के सम्मुख आई। राजा सुलैमान के सम्मुख पूछा गया कि यह जीवित बच्चा किसका है? और राज सुलैमान को इस समस्या का समाधान करने में ज़रा भी कठिनाई नहीं हुई। यहाँ पर दो माँ कह रही थी, यह बच्चा मेरा है। क्या यह सरल नहीं है? एक चाकू लो, बच्चे को काट कर दो बराबर भागों में करो और दोनों को दे दो। इस, पर सच्ची माँ ने कहा, 'नहीं, ऐसा मत करो। बच्चे को इस स्त्री को दे दो। लेकिन मेरे बच्चे की हत्या मत करो।' राजा सुलैमान ने कहा, 'इसका न्याय करने की समझ मुझ में नहीं है।' मनुष्य का हृदय कितना जटिल है। हम कई बड़ी जटिल परिस्थितियाँ पैदा कर देते हैं। हम एक दूसरे को भली-भाँति नहीं जानते। इसी कारण जब दो जन विवाह करते हैं - दो जटिल पुरुष-स्त्री, एक छत के नीचे रहते हुए, प्रभु यीशु मसीह द्वारा दी जाने वाली, एक मन करने वाली सामर्थ बिना और इस नम्रता के कि यह कह सकें, 'प्रभु हमें सीखा और अपनी समझ दे।' प्रत्येक माता-पिता यह कह सकता है, 'मुझे अपने बच्चों का सही पालन-पोषण करने की समझ नहीं है।' एक पिता और एक ऐसी माता जिसमें यह कहने की समझ न हो, कतई बेसमझ हैं।

आजकल जीवन इतना असुरक्षित हो गया है कि भविष्य का कोई अनुमान नहीं लगा सकता। संभवतः यह ऐसा समय है जबकि ज्योतिषियों की संख्या इतनी बढ़ सकती है क्योंकि लोग यह अनुमान नहीं लगा सकते कि क्या घटने वाला है। समझ क्या है? वह है कि हम अपने जीवन रूपी अँगूठी को प्रभु यीशु के हाथों सौंप दें और कहें, 'प्रभु तू मेरा मार्गदर्शन कर। मुझमें ज्ञान नहीं है।' यदि तुम यह कहने को तैयार नहीं हो, तो तुम नासमझ हो। कई ऐसे लोग हैं जो परमेश्वर की इच्छा जानने से डरते हैं। क्यों? शायद वह उनकी अपनी इच्छा के विपरीत हो। क्या तुम इतने बचकाने की लोगों से कल्पना कर सकते हो? वे परमेश्वर की इच्छा जानने से डरते हैं, केवल इस कारण कि शायद वह उनकी इच्छा के विपरीत हो या उनके आराम के। इसका अर्थ है, उनके लिए सत्य का कोई आदर-सम्मान नहीं है या उन्हें अपने जीवन को फलदायक बनाने की कोई इच्छा नहीं है। वे केवल लक्ष्य हीन हैं, भटकने वाले लोग। अत्यंत दुःखद 1 राजा 3:9 'इसलिए अपने दास को अपनी प्रजा के न्याय करने के लिए समझ वाला मन प्रदान कर कि मैं भले और बुरे का भेद कर सकूँ।' क्या कोई ऐसा है जो ऐसी प्रार्थना की उपेक्षा कर सके?

मैं परमेश्वर से समझ माँग रहा हूँ। कई लोग कई बातों के लिए मेरे पास आते हैं और मुझे समझ वाले मन की आवश्यकता है। वह कैसा मूर्ख व्यक्ति है जो अपनी समझ पर निर्भर करता है। वह परमेश्वर के चुनाव और निर्णय को अपनी समझ द्वारा बदल रहा है। क्या ऐसा करना सही है? तुम सोचते हो कि मेरे विचार परमेश्वर के विचारों का दर्शन प्रकट करते हैं? लेकिन कितने ही ऐसे हैं जो इस आधार पर निर्णय लेते हैं? 'अपनी समझ पर निर्भर मत रह। अपने सारे मार्गों में उसे स्वीकार कर और वह तेरा मार्गदर्शन करेगा।' देखो, हम ऐसा नहीं करते। हम अपनी ही योजना चाहते हैं। हम उन्हें बहुत पसंद करते हैं। हम उस विषय में अपने विचारों से इतने भरे हुए हैं कि कोई और क्या सोचे, परवाह नहीं। सुनो, तुम अपनी ही मनमानी करो चाहे कोई और कुछ भी सोचे। परन्तु यदि तू परमेश्वर को उस 'कोई और' में शामिल करोगे तो ठोकर ही खाओगे। तुम पूर्ण रूप से नष्ट हो जाओगे। अधिकतर लोगों के लिए सत्य तुलनात्मक है।

मैं कितना अश्चचर्य़ करता हूँ कि लोग कितने चालाक हो सकते हैं। मैं सोचता हूँ कि पापमय प्रवृति के साथ-साथ तुम्हारी सामाजिक पृष्ठभूमि भी इसमें योगदान देती है। कई लोग बड़ी संदेह और स्वार्थी मनोवृत्ति की पृष्ठभूमि से आते हैं। ऐसी पृष्ठभूमि से आना दुर्भाग्य की बात है, जोकि किसी को संदेह शील और ताक-झाँक करने वाला बनाती है। यह अत्यंत भयानक पृष्ठभूमि है, जब माता-पिता डर से भरे रहते हो, परिवार मैं एक-दूसरे पर भरोसा न हो और जब छोटी-छोटी बातों को लेकर परिवार में कहासुनी होती हो। तो तुम बिना नींव के, चालाक व्यक्ति बन जाते हो। तुम इस परिस्थिति और उस परिस्थिति के अनुसार कार्य करते हो। तो वह पृष्ठभूमि तुम्हारा चरित्र बन जाता है। यह बड़ी आशीष की बात है जब एक मसीह परिवार की नींव परमेश्वर के वचन (बाईबल) पर बनी हो, जहाँ हाँ-हाँ और न-न ही हो। 'देखो एक सच्चा इस्राएली, जिसमें कोई कपट नहीं।' और जब तुम एक पूरी पीढ़ी को इस तालाक की बाढ़ में बढ़ता देखते हो तो जरूर तुम्हारा हृदय टूटता होगा। क्या

तुम इसकी कल्पना कर सकते हो कि ये नन्हे बच्चे अपने जीवन में आगे चलकर कैसे कुटिल और स्वार्थी मन के होंगे, जो इस कहासुनी, झगड़े, अलगाव, क्रोध, वाद-विवाद, नाराज़दी और कड़वाहट में पल-बड़ रहे हैं। तुम अपने बच्चों को अपनी पृष्ठभूमि सौंप रहे हो और वे आगे चलकर स्वार्थी और चरित्रहीन बनेंगे।

याकूब, एक ऐसे व्यक्ति का उदाहरण है जो समझता था कि सत्य को अपनी इच्छा अनुसार तोड़ा-मरोड़ा जा सकता है और अपनी सुविधा के अनुसार बदला जा सकता है। लेकिन उसे क्या लाभ पहुँचा? उसने अपने दस बेटे खोए, वे सब धोखेबाज़ बने। 'ठीक है, हम अपने पिता को कहेंगे, कि किसी जंगली जानवर ने हमारे भाई युसूफ को मार डाला और खून से सने इन कोट को अपने पिता को दिखाएँगे।' हम इस पर खून के दाग लगा देंगे और अपने पिता से पूछेंगे' क्या यह तुम्हारे बेटे का कोट है?' ज़रूर वह इसे पहचान लेगा।' और यहाँ याकूब है जो कई सालों तक अपने बेटे के लिए विलाप करता रहा जबकि युसूफ मिस्र के राजसिंहासन के साथ बैठा था। यहाँ एक ऐसा पिता है जो कि बिन सांत्वना के अपने बेटे की मृत्यु पर विलाप कर रहा है जो कभी घटी ही नहीं। लेकिन उसे धोखा किसने दिया? उसके अपने बेटों ने। उन्हें ऐसा स्वभाव किसने दिया? स्वयं याकूब ने। उसके आंसूओं और विलाप के लिए कौन ज़िम्मेवार था? वह स्वयं। मेरे प्यारे मित्रों, हम जो बोएंगे वही काटेंगे। तुम सत्य से ऐसे बर्ताव कर रहे हो कि वह यह भी हो सकता है, वह भी हो सकता है। वह यीशु भी हो सकता है और कोई और भी हो सकता है। ध्यान रखो, तुम अपनी करनी का फल पाओगे। सत्य के साथ कभी खिलवाड़ नहीं किया जा सकता। कोई सत्य को नष्ट नहीं कर सकता, कोई नहीं। 'मैं ही सत्य हूँ', यीशु ने कहा। यह युगों से अकाट्य वचन हैं, जो निर्विवाद हैं। लेकिन जो सत्य के साथ खिलवाड़ करते हैं और उसे भ्रष्ट करते हैं, वह आगे चलकर आँसुओं का फल भुगतेंगे। सत्य के साथ खिलवाड़ मत करो। सत्य को मोल ले लो और कभी मत बेचो। वह लहू द्वारा ख़रीदा गया है। हमारे प्रभु यीशु का जीवन सत्य को बनाए रखने के लिए दाँव पर लगा। परमेश्वर पवित्र हैं, और हमारे पाप की सजा निश्चित है, औऱ इसकी क़ीमत चुकानी होगी। उसकी क़ीमत चुकाए बिना कोई छुटकारा नहीं। मेरे प्रिय मित्रों, वह सत्य अकाट्य खड़ा है, वही चट्टान है जिस पर मैं खड़ा हूँ। तुम्हारी चट्टान क्या है? तुम कहाँ खड़े हो? मैं सत्य पाने के लिए कुछ भी न्योछावर कर दूँगा। 'सत्य को मोल ले लो और बेचो मत और समझ और बुद्धि।'

सत्य की परख!

''जान लो कि यहोवा ही परमेश्वर है। उसी ने हमको बनाया और हम उसी के हैं, हम उसकी प्रजा और उसे धन्यवाद दो और उसके नाम को धन्य कहो। (भजन संहिता 100:3,4)

नयी वाचा... पृष्ठ 1 से

परमेश्वर का स्वभाव लोगों में नहीं आ सकता है। व्यवस्था मनुष्यों के दिमाग में आ सकती है परन्तु हृदय वही पुराने जैसा ही रहेगा। परमेश्वर अपनी व्यवस्था को उनके हृदयों में डालना चाहते हैं। और कोई भी दूसरा रास्ता भी नहीं था, ये केवल क्रूस के द्वारा ही संभव था।

मूसा ने इस्राएलियों को सिखाया कि फसह के मेम्ने का वध करें इसलिए कि इस्राएलियों को मिस्र से छुटकारा मिला था। परमेश्वर का निष्कलंक मेम्ना वध किया जाये कि वह नई वाचा को हमारे मनों में डाले। जब हम यीशु को देखते हैं, हमारे अंदर कुछ होता है जैसे कि जब सर्प से काटे लोगों ने पीतल के सांप को देखा था। उनके शरीर के अंदर फैले जहर से छुटकारा मिला। जब क्रूस पर यीशु ने हमारे पापों को अपने ऊपर लिया तभी से नई वाचा का आरंभ हो सका। शैतान दृढ़ता से खड़ा था कि व्यवस्था के आधार पर लोगों पर हक जमा सके। "देखो, ऐसे दिन आने वाले हैं, "यहोवा की यह वाणी है," जब मैं इस्राएल के घराने और यहूदा के घराने से एक नई वाचा बांधूंगा, ... परन्तु जो वाचा में उन दिनों के बाद इस्राएल के घराने के साथ बान्धूंगा वह यह है, "यहोवा कहता है, "मैं अपनी व्यवस्था उनके मनों में डालूंगा और उसे उनके हृदयों पर लिखूंगा, और मैं उनका परमेश्वर ठहरूंगा तथा वे मेरी प्रजा ठहरेंगे।" (यिर्मयाह 31:31-33)

हमारे दिलों में ये व्यवस्था हमारे जीवन की लगाम (बागडोर) ठहरेगी। जब परमेश्वर का सत्य हमारे जीवन की लगाम बन जायेगा, वे हमें जीवन के पथ पर अगुवाई करेगा और हम परमेश्वर की अनन्त बुद्धि के पूरी तरह आधीन हो जायेंगे। क्रूस और जी उठने की शक्ति के बिना पवित्र आत्मा नहीं दी जा सकती है। "तब उसने उनसे कहा, "यह वाचा का मेरा वह लहू है जो बहुतों के लिए बहाया जाता है।" (मरकुस 14:24) परमेश्वर के लिए भविष्य, वर्तमान और भूतकाल एक समान है। जब वे वाचा बांधते हैं, यह अनन्तता की वाचा होती है। क्रूस एक अनन्त उद्देश्य है। परमेश्वर ने ख्रीष्ट के बलिदान को स्वीकार कर लिया। यदि ख्रीष्ट नहीं मरते, तो मनुष्य के लिए यह संभव नहीं होता कि वह आत्मा में जीवित रहे। जब हम क्रूस का ध्यान करते हैं तो उसके द्वारा नया जीवन पाते हैं, इस नये स्वाभाव का बीज हम में होता है।

यीशु मसीह अपने लहू के द्वारा हमारे नये जन्म पर मुहर लगा देता हैं। शैतान की हम पर कोई शक्ति नहीं रहती और हमारे अंदर नया उद्देश्य काम करना

शुरू करता है। जब हमारी 'मैं' क्रूस पर कीलों से ठोंकी जाती है तब एक नया अनुभव हमारे अंदर आता है। यही पवित्रीकरण या शुद्धिकरण है। बिना लहू बहाए पाप से कोई छूट या माफी नहीं है। क्रूस पर यीशु ख्रीष्ट के दोनों ओर दो प्रकार के लोगों को देखते हैं – एक तो वे जो पश्चाताप करते हैं वे ख्रीष्ट के साथ स्वर्ग जायेंगे और दूसरे जो पश्चाताप नहीं करते हैं वे नीचे नरक में जायेंगे।

परमेश्वर की दृष्टि में हम चोर हैं। परमेश्वर के द्वारा दी गई प्रतिभा को अपने लिए सुरक्षित रखते हैं कि इस संसार के विनाशकारी आनन्द में उसे उड़ा दें। उस उड़ाऊ पुत्र की तरह अपनी सम्पति लेकर उसे बर्बाद कर दें। बहुत से धर्मी लोग भी हैं जो चोर है। वे परमेश्वर की महिमा चुरा लेते हैं। उन की धार्मिकता फटे चिथड़ों की तरह है। परमेश्वर की धार्मिकता हमेशा पड़ोसियों को स्पर्श करती है। वो धार्मिकता अपने स्वार्थ पर ही ध्यान देती है और अपनी ही बड़ाई करती है ,वह परमेश्वर की धार्मिकता नहीं है। जीवन की भेंट परमेश्वर से मिली है। उनके स्वरूप में जीवन पाना परमेश्वर से मिला तोहफा है। सीखने की योग्यता परमेश्वर से मिली है। हम चोर हैं। क्रूस पर हम दो चोरों को देखते हैं। वो मानवता के चिन्ह हैं। उनमें से एक अपनी गलती मानकर स्वीकार कर लेता है कि वो सही सज़ा पा रहा है। दूसरा अपने मन को कठोर कर लेता है।

क्रूस पर ख्रीष्ट ने सर्वोच्च बलिदान दिया। नयी वाचा क्रियाशील हुई। इसलिए एक नया हृदय और एक नया आत्मा हमें दिया गया और हमें मसीही जीवन जीने के लिए सहजता से समर्थी मिलती है। एक उच्चतम शक्ति कार्य करने के लिए आती है - जो मानसिक या बौद्धिक शक्ति नहीं है। यह एक आत्मिक शक्ति है। यह परमेश्वर की सामर्थी शक्ति है - जो मरे हुए को जी उठाने की शक्ति है। परमेश्वर अपने प्रत्येक बच्चों के लिए चाहते हैं कि वे अपने जीवन में इस जी उठाने की शक्ति का आनन्द उठायें।

- स्वर्गीय एन.दानियेल।

अद्भुत अनुग्रह

'व्यवस्थाविवरण 32:10' - यह वचन मेरे इतिवृत्त को संक्षिप्त में अभिव्यक्त करता है,' अठारहवीं सदी का एक ईसाई, जॉन न्यूटन ने लिखा, एक दिन:
'उसने उसे जंगल में वरन पशुओं के चीत्कार से भरी वीरान मरूभूमि में पाया उसने उसके चारों ओर रहकर उसे सम्भाला और अपनी आँखों की पुतली के समान उसकी सुरक्षा की। 'वास्तव ही उन्होंने मुझे पशुओं के चीत्कार से भरी वीरान मरूभूमि में पाया!' न्यूटन ने आगे लिखा, विविध तरह की परिस्थितियों में से उन्होंने मेरा अगुवाई की है। और हर तरह की हालतों में मुझे संभाला और अपनी आँखों की पुतली के समान मेरी सुरक्षा की है!'

आत्मा-सुधार

सन 1725, लंदन में जन्मा न्यूटन सातवे जन्मदिन के कुछ ही समय पहले अपनी माँ को खोकर मातृहीन हो गया। माँ के अभाव में, बाद में दुष्टता के मार्गों को सीखने छोड दिया गया। उसका पिता जो कई सालों से माहिर नाविक और जहाज कप्तान था, ग्यारह वर्ष की आयु में ही उसे समुद्री यात्रा पर ले गया। और तब से ले कर सन 1742 तक न्यूटन ने कई समुद्री यात्रायें की है।

न्यूटन सोलह वर्ष का होने से पहले ही उसने तीन-चार दफा धार्मिक व्यवसाय को अपनाकर छोड़ भी दिया। मगर दिल में वह निष्ठारहित था। वह सोचता था कि नरक से बचने के लिए ही उसे धर्म की जरूरत है। मगर, पाप से उसे प्रेम था और उसे वह त्यागना नहीं चाहता था। उसका पिछला सुधार एक तपस्वी के समान आत्मसंयमी बनने का था, फिर भी उस मार्ग में वह पाप की प्रबल शक्ति के नीचे दब कर उदास, मूर्ख, बेकार और नामिलसार बनकर रह गया।

सन 1742 में, एक आम नाविक बनकर न्यूटन इटली देश में वेनीस शहर गया था। वहाँ अपना तितिक्षावादी वैराग्य को छोड दिया, अपना धर्म को भी त्याग कर परमेश्वर से बहुत दूर कदम लिया। मगर बहुत समय के बाद आए एक सपने के द्वारा असाधारण रोक लगी, जिसके कारण उसके मन पर बहुत प्रभाव पड़ा, लेकिन वह बदलाव भी स्थायी नहीं था।

परमेश्वर की ओर वापसी

हर तरह का आराम, असफल साबित होने पर था ऐसे समय में उसने सुसमाचार में जो उम्मीदें और सांत्वना थी उसे भी त्याग दिया। न्यूटन नास्तिकता में विश्वास करने लग गया था। सन 1745 से 1747 तक उसने एक गुलाम बनकर अफ्रीका में बिताया। वहाँ बिताये यह साल बाद में अपने जीवन में पूर्ण रूप से रिक्त समय, होने का एहसास किया। वह आत्मिक रूप से डूबता जा रहा था। मगर उसने पश्चाताप नहीं किया।

सन 1748 में तथापि उसने घर की तरफ लौट रही नौका में शामिल था कि समुद्र में तुफान उठ गया था और जहाज को नुकसान पहुँचा। और कई सालों में पहली दफा न्यूटन को कृपा पाने की अपनी इच्छा को जाहिर करना पडा। अपने निहायती महान पापीपन का उसे ज्ञान था। और जहाज के पक्ष में परमेश्वर ने अपना हस्त कार्य प्रदर्शित किया। न्यूटन अब प्रार्थना करने लगा। वह अब यीशु के बारे में सोचने लगा, जिसका अक्सर वह उपहास करता था। उसका जीवन, उसकी मृत्यु वो भी स्वयं के पाप के बदले नहीं थी। बाइबल में उसने आत्मा के बारे में पढ़ा था, जो बाइबल को समझने में मदद करने की माँग करने वालों से संपर्क कर ऐसा किया है।

अतंतः जब जहाज ने आयरलैंड में लंगर डाला, न्यूटन समझने लगा कि एक परमेश्वर है जो प्रार्थना सुनते है और उसका उत्तर भी देते है। उडाऊ पुत्र के दृष्टान्त में, वापस लौटते पापी के प्रति प्रभु की भलाई को भी उसने देखा और उसने बहुत प्रार्थना किया। उसे बचाने के लिए प्रभु ने हस्तक्षेप किया और न्यूटन ने आशा की कि वह और करेंगे। न्यूटन की तरफ परमेश्वर वापस आने लगे और वह जो 'पापियों में प्रमुख' था, और यीशु मसीह के अद्भुत अनुग्रह से, अंततः वह एक विश्वासी बन गया।

- रिचार्ड सिसिल कृत जॉन न्यूटन, मेरिलिनरौस द्वारा लिखा।